भगवान शिव

(अध्यात्मशास्त्रीय विवेचन, उपासना एवं शिवचालीसा)

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाके उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

एवं पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

प्रस्तुत पुनर्मुद्रणकी २,००० प्रतियां

एवं अबतक ३९,९०० प्रतियां प्रकाशित !

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजी के अद्वितीय कार्यका संक्षिप्त परिचय

१. अध्यात्मके प्रसार हेतु ‘सनातन संस्था’ की स्थापना !

२. ‘गुरुकृपायोग’ नामक साधनामार्गके जनक !

३. हिन्दू राष्ट्रकी (ईश्वरीय राज्यकी) स्थापनाकी उद्घोषणा (वर्ष १९९८)

४. ग्रन्थ-रचना : जनवरी २०२५ तक ३६६ ग्रन्थोंकी १३ भाषाओंमें ९८ लाख ६६ सहस्र प्रतियां !

५. शारीरिक, मानसिक तथा अनिष्ट शक्तियोंकी पीडाओंकी उपचार-पद्धतिसम्बन्धी शोध !

६. ‘सनातन प्रभात’ नियतकालिकोंके संस्थापक-सम्पादक !

७. ‘हिन्दू राष्ट्र’की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन एवं उन्हें आध्यात्मिक स्तरपर दिशादर्शन !

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – ‘**www.Sanatan.org**’.)

अनुक्रमणिका

卐 **शिवजीसे सम्बन्धित विवेचनका महत्त्व** ६

卐 **भूमिका** ७

१. व्युत्पत्ति एवं अर्थ ८

२. कुछ अन्य नाम ८

३. विशेषताएं (शारीरिक एवं आध्यात्मिक) ९

४. कार्य ५. शिवजीके रूप १६

६. मूर्तिविज्ञान २१

७. सनातन-निर्मित शिवजीका सात्त्विक ‘चित्र’ एवं ‘नामजप-पट्टियां’ २३

८. शिवजीके प्रसिद्ध स्थान २६

९. उपासना २९

卐 **आरतीका महत्त्व एवं शिवजीकी आरती** ५७

卐 **शिवचालीसा एवं अर्थ** ६०

शिवजीसे सम्बन्धित विवेचनका महत्त्व

आध्यात्मिक उन्नति हेतु 'पिण्डसे ब्रह्माण्डतक' की यात्रा पूर्ण करनी पडती है । इसका अर्थ है कि जो तत्त्व 'ब्रह्माण्ड'में अर्थात शिवमें हैं, उनका 'पिण्ड'में अर्थात जीवमें आना आवश्यक है । तभी जीव शिवसे एकरूप हो सकता है। पानी की बूंदमें तेलका थोडासा भी अंश हो, तो वह पानीसे एकरूप नहीं हो सकता; उसी प्रकार जबतक शिवभक्त, शिवजीकी सर्व विशेषताएं आत्मसात नहीं कर लेता, तबतक वह शिवजीसे एकरूप नहीं हो सकता; अर्थात उसे सायुज्य मुक्ति नहीं मिल सकती । इस सन्दर्भमें इस लघुग्रन्थमें दी शिवजीकी विशेषताएं साधकोंके लिए निश्चित ही मार्गदर्शक सिद्ध होंगी। श्रीविष्णु, श्रीराम, श्रीकृष्ण, श्री हनुमान, दत्तात्रेय, शक्ति, श्री गणपति एवं श्री सरस्वती से सम्बन्धित विशिष्ट ज्ञान देनेवाले लघुग्रन्थ भी उपलब्ध हैं ।

पढें सनातन संस्थाका लघुग्रन्थ !

श्रीरामरक्षास्तोत्र एवं हनुमानचालीसा (अर्थसहित)

भूमिका

अधिकांश लोगोंको देवतासे सम्बन्धित जो थोडा ज्ञान रहता है, वह बचपनमें पढी अथवा सुनी कहानियोंद्वारा होता है । इस अल्प ज्ञानके कारण देवतापर विश्वास भी अल्प ही रहता है । देवतासे सम्बन्धित अधिक ज्ञान प्राप्त होनेपर अधिक विश्वास निर्माण होनेमें सहायता मिलती है । विश्वासका रूपान्तर आगे श्रद्धामें होता है, जिससे देवताकी उपासना एवं साधना भी उचित ढंगसे हो पाती है । इस दृष्टिकोणसे इस लघुग्रन्थमें शिवजीसे सम्बन्धित प्रायः अन्यत्र न पाया जानेवाला उपयुक्त अध्यात्मशास्त्रीय ज्ञान देनेपर विशेष ध्यान दिया है । शिवजीके विषयमें विस्तृत विवेचन सनातनके ग्रन्थ 'भगवान शिव'में दिया है ।

श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि यह लघुग्रन्थ पढकर प्रत्येक व्यक्तिको अधिकाधिक साधनाकी प्रेरणा मिले । – **संकलनकर्ता**

टिप्पणी कुछ सूत्रोंके अन्तमें लिखा है – 'सन्दर्भ : अज्ञात'। ये सूत्र विविध धार्मिक ग्रन्थ, सन्त या अध्यात्म के अधिकारी व्यक्तियोंके नियतकालिक आदि से लिए हैं । ऐसे सूत्रोंका सन्दर्भ पाठकोंको ज्ञात हो तो हमें सूचित करें।